# R-405

## B. A. Fourth Semester (ATKT/EX) Examination, 2019-2020

## SANSKRIT LITERATURE

Paper-Only One

**महाकाव्य एवं नाटक**

*Time : 3 Hours* *Maximum Marks : 85*

*Minimum Marks : 28*

---

**खण्ड-अ**

## Section-A

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

## ( Short Answer type questions )

**नोट :** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंङ्क समान हैं। **[5×5= 25]**

**1.** रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग के आधार पर राजा दिलीप और सिंह का संवाद लिखिए।

**अथवा**

राजा दिलीप का चरित्र-चित्रण इस प्रकार कीजिए कि उसकी निष्ठा, त्याग, भक्ति एवं सेवा-भावना आदि के गुण स्पष्ट परिलक्षित हो उठें।

**2.** नाट्यशास्त्र में वर्णित नाट्यवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

**अथवा**

नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय का सारांश लिखिए।

**3.** प्रस्तावना अथवा विदूषक पर टिप्पणी लिखिए।

**4.** ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' के चतुर्थ अङ्क के आधार पर शकुन्तला की विदाई का चित्राङ्कन कीजिए।

**अथवा**

''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' में वर्णित प्रकृति-चित्रण पर लेख लिखिए।

**5.** महाकवि भास का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं के नाम बताइए।

**अथवा**

महाकवि कालिदास की नाट्यकृतियों का वर्णन कीजिए।

## खण्ड-ख

## Section-B

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

### ( Long Answer type questions )

**नोट :** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं। **[5×12= 60]**

**6.** अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए:

(i) तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुमपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।
मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।।

(ii) सञ्चारपूतानि दिगन्तराणि कृत्त्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुम्।
प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः।।

(iii) अलं महीपाल! तव श्रमेण प्रयुक्तामप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्।
न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।।

(iv) वत्सस्य होमार्थविधेश्च शेषमृषेरनुज्ञामधिगम्य मातः।
औधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुं षष्ठांशमुर्व्यां इव रक्षितायाः।।

**7.** अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए:

(i) कत्यङ्ग किम्प्रमाणश्च प्रयोगश्चास्य कीदृशः।
सर्वमेतद्यथातत्त्वं भगवन् वक्तुमर्हसि।।

(ii) सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्प प्रवर्त्तकम्।
नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।।

(iii) अशक्या पुरुषैः साधु प्रयोक्तुं स्त्रीजनादृते।
ततोऽसृजन् महातेजा मनसाप्सरसो विभुः।।

(iv) दुःखार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।।

**8.** निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए:

(i) सूत्राधार

(ii) नान्दी

(iii) प्रवेशक

(iv) भरतवाक्य

**9.** अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए:

(i) यदालोके सूक्ष्मं व्रजाति सहसा तद्विपुलतां
यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्।
प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयो:
न मे दूरे किञ्चित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्।।

(ii) सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

(iii) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठ: स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकस:
पीड्यन्ते गृहिण: कथं नु तनयाविश्लेषदु:खैर्नवै:।।

(iv) अभिजनवतो भर्तु: श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभि: कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि।।

**10.** भवभूति की कृतियों का परिचय देते हुए उनकी नाट्यशैली की समीक्षा कीजिए।

**अथवा**

भट्टनारायण के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व पर प्रकाश डालिए।

◆◆◆